किया जाना उपयुक्त होता है।

बुआई का समय – बुआई हेतु उपयुक्त समय मार्च से अप्रैल माह होता है।

बुआई हेतु उपयुक्त विधि – बीज की बुआई सीधे जर्मिनेशन ट्रे अथवा क्यारी में 5 से 8 सेमी. रेत की परत बिछाकर करना चाहिए। बीज को अधिक नीचे दबाकर गहराई में बोने से अंकुरण क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। अतः इसके लिए रेत की तह के अलावा बालूई दोमट भूमि जिसमें जल का निकास अच्छा हो भी उपयोग में लाना चाहिए। बुआई के 7 दिनों के पश्चात अंकुरण प्रारंभ हो जाता है एवं 21 दिनों में पूर्ण अंकुरण हो जाता है। अंकुरण पश्चात पौध की लम्बाई 10 से 12 सेमी. होने पर उसे रोपणी से पोलीथीन बैग्स में प्रतिरोपित करते समय पोलीथीन बैग्स में भरे गए मिश्रण का अनुपात 2:1:1: अर्थात 2 भाग मिटटी +1 भाग गोबर खाद + 1 भाग रेत होना आवश्यक होता है।

रखरखाव/रोकथाम – प्रारंभ में पौधे अधिक कोमल होने के कारण उन्हें तेज घूप एवं गर्म हवा से बचाना आवश्यक होता है एवं सामान्य सुरक्षा की दृष्टि से वृक्षारोपण के समय पौधे की ऊँचाई 25 से 30 सेमी. होना चाहिए। वृक्षारोपण के लिए रोपणी से पौधे निकालते समय विशेष सावधानी बरतनी होती है। इसके लिए पौधे को रोपणी से जड़ की आसपास की मिटटी सहित उखड़ना अत्यंत आवश्यक होता है क्योंकि मिटटी रहित जड़ सहित पौधा निकालने पर उसके मृत होने की 50 प्रतिशत संभावना होती है। रोपण के पौधों की जड़ों को दीमक एवं अन्य बीमारियों से बचाने के लिए कीटनाशक दवा जैसे वॉविस्टीन, मैलाथियान आदि का 1 प्रतिशत सान्द्रता के धोल का छिड़काव करना चाहिए।

उपयोगिता – कृषि वानिकी के लिए यह अत्यन्त उपयोगी प्रजाति है इसे खेत की मेड़ पर लगाया जा सकता है तथा इसकी लकड़ी का उपयोग कत्था बनाने में किया जाता है जो कि आय वृद्धि का मुख्य साधन है। औषधीय उपयोग जैसे खॉसी, कब्ज, कफ, अल्सर एवं चोट आदि में किया जाता है। इसके साथ ही आयुवेर्दिक एवं यूनानी औषधीय तैयार करने में इसका अधिकाधिक प्रयोग होता है। इसकी लकड़ी कृषि औजारों बेलगाड़ी धुरी एवं पहिए बनाने के काम आती है। कत्था का उपयोग पाचन, गले एवं मुह के संक्रमण आदि बीमारियों में इसकी ठंडक एवं पाचक गुण के कारण किया जाता है।

सम्पर्क

डॉ. अर्चना शर्मा

वैज्ञानिक

बीज शाखा

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र.)

0761-2666529, 2665540

मूल्य रु. 10/-

खैर

(अकेशिया कटेचू)

बीज प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोली पाथर, जबलपुर (म. प्र.)

प्रजाति का नाम – खैर

वानस्पतिक नाम – अकेशिया कटेचू

प्रस्तावना – यह छोटे आकार का काटेदार झॉड़ीनुमा वृक्ष होता है इसकी संयुक्त पत्तिया पंख जैसे होती है जिस पर छोटे–छोटे पर्णक लगे होते है। यह माइमोसी कुल का एक पर्णपाती वृक्ष है। यह सामान्यतः ठंडे तथा अधिक आर्द्रता वाले इलाकों में पाया जाता है। खैर का वृक्ष अधिक से अधिक 40° C से 50° C तथा कम से कम 2.5° C से 7.5° C तक तापमान में वृद्धि करता है यह तेजी से बढ़ने वाले वृक्षों की श्रेणी में आता हैं। वृद्धि दर स्थानीय कारक के अनुसार परिवर्तनीय होती है। सुखे क्षेत्रों व रेतीली जमीन में धीरे–धीरे वृद्धि होती है परंतु उच्च जल निकासी व जलोढ़ मिट्टी में सबसे अच्छा पनपता है। कृषि वानिकी के लिए यह अत्यंत उपयोगी प्रजाति है। इसकी लकड़ी से कत्था (खैर) प्राप्त होता है। वृक्ष में पत्तियॉ फरवरी में गिर जाती है एवं अप्रैल मई में नई पत्तियॉ आने लगती है। वृक्ष के ऊपर पंखनुमा छत्र होता है जो कि देखने में काफी अच्छा लगता है।

प्राप्ति स्थान – यह मध्यप्रदेश में मुरैना, सिवनी, बालाघाट, बैतूल, होशंगाबाद, शहडोल, देवास, खंडवा रायसेन एवं जबलपुर आदि जिलों में पाया जाता है।।

मृदा का प्रकार – यह काली कछारी, बालूई दोमट रेतीली मिटटी में सुगमता से उगाया जा सकता है।

बीज चक्र – वृक्ष में बीज प्रतिवर्ष आता है।

पुष्पन का समय – वृक्ष में फूल जून से जुलाई माह में लगते है।

फलन समय – नवम्बर से दिसम्बर माह में फल लगना शुरू होते है। जो कि जनवरी से फरवरी माह के मध्य पक कर तैयार होते है।

एकत्रीकरण समय – बीज के एकत्रीकरण का समय जनवरी से फरवरी माह के मध्य होता है। इसके बीज में फली के अंदर बीज पकते समय कीड़ा लग जाता है जिससे काफी मात्रा में बीज खराब हो जाता है। अतः कीड़े से बचाने के लिए बीज को पकने से 15 दिन पूर्व तोड़ लेना अति आवश्यक होता है।

प्रतिकिलो बीजो की संख्या – 1 किलोग्राम बीज में लगभग 25000 से 30000 बीज पाए जाते है।

जीवन क्षमता अवधि – बीज की जीवन क्षमता अवधि एक वर्ष होती है।

अंकुरण प्रतिशत – ताजे एकत्रीत बीजों में अंकुरण 45 से 50 प्रतिशत तक प्राप्त होता है।

सामान्य भंडारण की स्थिति मे –

प्रथम तीन माह में	–	45 से 50 प्रतिशत
तीन से छः माह में	–	40 से 45 प्रतिशत
छः से नौ माह में	–	30 से 35 प्रतिशत
नौ से बारह माह में	–	20 प्रतिशत से कम
पौध प्रतिशत	–	30 से 40 प्रतिशत ।

उपयुक्त भंडारण – बीज को वृक्ष से पकने के 15 दिन पूर्व तोड़ने के पश्चात उसे 2 दिनों तक धूप में सूखाकर भंडारण के लिए उपयोग में लाना चाहिए। इसके साथ ही भंडारण पूर्व कीड़े लगे हुए बीजों को सेप्रेटर की सहायता से अलग करके ही स्वस्थ बीजों को भंडारित करना उचित होता है क्योंकि कीड़ा लगा हुआ बीज अधिक समय तक भंडारित नहीं किया जा सकता है साथ ही अन्य स्वस्थ बीजों में भी कीड़े का प्रकोप होने की संभावना बढ़ जाती है। अतः धूप में सूखाने के पश्चात बीज को प्लास्टिक जार में सिलका जेल रसायन के साथ 1½ वर्ष तक सुगमता पूर्वक भंडारित कर 30 से 35 प्रतिशत तक अंकुरण प्राप्त किया जा सकता है। जबकि सामान्य स्थिति में 1 वर्ष पुराने बीज में 5 से 17 प्रतिशत तक अंकुरण प्राप्त होता है।

बुआई पूर्व उपचारण – इसके बीजों को फली से संग्रहण के बाद बोरे या खुरदरे स्थान पर रगड़ कर अलग करना चाहिए। बुआई पूर्व बीज को 24 घंटे ठंडे पानी में भिगोकर रखने से अंकुरण प्रतिशत बढ़ जाता है अथवा 60 प्रतिशत सान्द्रता वाले सल्फूरिक अम्ल को धोल में 10 मिनिट डूबोकर फिर साफ पानी में अच्छी तरह थोकर बुआई करने पर अंकुरण प्रतिशत अनुपचारित बीज की तुलना में 1½ से 2 गुना बढ़ जाता है।

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम – जल्दी एवं अधिक अंकुरण प्राप्त करने के लिए बीज की बुआई रेत में